

राज्य में होगा भूमि सर्वे

राज्य में भूमि सर्वे कराने की प्रक्रिया प्रारंभ की गयी है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के निर्देश के बाद राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग राज्य में भूमि के सर्वे के लिए कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, केरल, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा आदि राज्यों द्वारा अपनायी जा रही प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए इन राज्यों में आधिकारियों की टीम जल्द भेजगा। झारखण्ड में भूमि सर्वे की व्यवस्था को सुनिश्चित किया जा सके। दरअसल, सीएम की बैठक में यह बात सामने आयी थी कि राज्य में लंबे समय से सर्वे नहीं होने के कारण आनेवाले दिनों में विभिन्न प्रकार की भूमि एवं विधिव्यवस्था संबंधी समस्या उत्पन्न होने की संभावना है। ऐसे में इसके निराकरण के लिए जल्द ही सर्वे का काम शुरू किया जाना जरूरी है। हालांकि, राज्य में भूमि बदोबस्ती और सर्वेक्षण का काम अभी भी चल रहा है। किस जिले में कितना और किस स्टेज पर काम हो रहा है, इसका आकलन कराके सारी रिपोर्ट का संकलन किया जायेगा। इसके बाद अन्य राज्यों के मेथड का भी उपयोग कर सर्वे का काम कराया जायेगा। बता दें कि झारखण्ड की राजधानी सहित 20 जिलों में 47 वर्षों से जमीन का सर्वे नहीं हुआ है। खतियान जमीन का ऐसा कहाजेता है, जो उपरी का साविकाम तक परिवर्तित

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक तीन दशक पहले की तुलना में लोग अब ज्यादा जी रहे हैं। 2019 में जहां लोगों की जीवन प्रत्याशा 72.8 वर्ष हो गई, वहीं 1990 में लोग नौ वर्ष कम जीते थे और उम्रीद जाताई जा रही है कि 2050 तक जीवन प्रत्याशा 77.2 वर्ष हो जायेगी। हालांकि भारत का दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बनना कोई उपलब्धि नहीं, बल्कि यह आबादी देश के लिए आने वाले वर्षों में गंभीर चुनौती न बन जाए। भारत को जनसंख्या नियोजन के लिए अभी से ठोस कदम उठाने होंगे। भारत में फिलहाल दुनिया की सबसे ज्यादा युवा आबादी है।

सं युक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा थी है कि, 'आठ अरब उम्मीदें, आठ अरब स्वप्न और आठ अरब संभावनाएँ'। इसका सीधा अर्थ यही है कि दुनिया में जो भी बच्चा जन्म लेता है, उसके साथ उम्मीदें, स्वप्न और संभावनाएं जुड़ी होती हैं। इसीलिए यूएन दुनिया की आबादी आठ अरब हो जाने को मानवता के लिए एक अहम पड़ाव मानता है, जिसमें घटती गरीबी, लौगिक समानता, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और शिक्षा का विस्तार जैसी उपलब्धियां शामिल हैं। ज्यादा महिलाएं जीने में सक्षम हैं, ज्यादा बच्चे जीवित रह पा रहे हैं और लोग दशकों तक स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। दुनिया की आबादी आठ अरब हो जाने को मानव सभ्यता के विकास के दृष्टिकोण से खुशी का पल इसलिए भी माना जा रहा है, क्योंकि

व्यक्तिगत स्वच्छता आदि में दुनिया के देशों द्वारा सुधार किये जाने के कारण ही संभव हुआ। सयुक्त राष्ट्र के मुताबिक तीन दशक पहले की तुलना में लोग अब ज्यादा जी रहे हैं। 2019 में जहां लोगों की जीवन प्रत्याशा 72.8 वर्ष हो गई, वहीं 1990 में लोग नौ वर्ष कम जीते थे और उमीद जताई जा रही है कि 2050 तक जीवन प्रत्याशा 77.2 वर्ष हो जायेगी। हालांकि भारत का दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बनना कोई उपलब्धि नहीं, बल्कि यह आबादी देश के लिए आने वाले वर्षों में गंभीर चुनौती न बन जाए। भारत को जनसंख्या नियोजन के लिए अभी से ठोस कदम उठाने होंगे। भारत में फिलहाल दुनिया की सबसे ज्यादा युवा आबादी है, लेकिन इसका देश के विकास में भरपूर लाभ कैसे लिया जाए, यह हमारे तंत्र के लिए गंभीर चुनौती है।

न केंद्रित करना होगा, जहां उनके ए समुचित शिक्षा तथा रोजगार के पैत अवसर उपलब्ध हों। इसके नावा उद्योग-व्यापार को बढ़ावा के भी विशेष उपाय करने की कार है, ताकि देश में कृषि क्षेत्र जरूरत से ज्यादा आबादी की परता को कम कर उसकी विदकता का सही इस्तेमाल किया सके। बढ़ती आबादी की फोटोक परिस्थितियों के कारण ही विधान में जिस उद्देश्य से प्राथमिक क्षा का लक्ष्य निर्धारित किया गया वह भी गौण हो गया है हालांकि त दशकों में विभिन्न योजनाओं माध्यम से नए रोजगार जुटाने के वर्क्रम चलाये गये, लेकिन बढ़ती आबादी के कारण ये सभी कार्वर्क्रम टं के मुंह में 'जीरा' ही साबित हो गए। बढ़ती जनसंख्या के कारण ही वामें आबादी और संसाधनों के व असंतुलन बढ़ रहा है। तेजी से

तक शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बातों को पहुंचाने में रहे हैं। इसलिए जनसंख्या गण कार्यक्रमों की सफलता के सर्वाधिक जरूरी यही है कि निर्धनता में जी रहे लोगों को और नियोजन कार्यक्रमों के बाहर के बारे में जागरूक करने की वासध्यान दिया जाए, क्योंकि यह इन कार्यक्रमों में लोगों की अपरी नहीं होगी, तब तक लक्ष्य पर्याप्त संभव नहीं है। 'पीपुल्स नान' की अध्ययन रिपोर्ट में ही में यह चौकाने वाला सा हुआ है कि देश में चार की बेरोजगारी है, दूंढ़ने के लिए काम नहीं मिल पाने वाले निराश होकर काम ढूँढ़ना बंद नहीं बोलते, सपाह में केवल एक काम पाने वाले और ऐसा भी बर पाने वाले, जिनका काम कृता बढ़ाने में मददगार नहीं होता, जो भी उन्हें देखता है।

■ योगेश कुमार गोयल

फुटबॉल के महामुकाबले पर दुनिया की नजर

र विवार 20 नवंबर से कतर में फुटबॉल का महाकुभ शुरू हो रहा है। इस बार विश्व की 32 टीमों के बीच कुल 64 मुकाबलेहोंगे। पिछले तमाम विश्व कप की तुलना मेंइस बार का टूर्नामेंट खास है, क्योंकि कतर में क्योंकि कतर में खिलाड़ियों और टीमों को कहीं ज्यादा पैसे मिलते हैं। सेमीफाइनल तक का सफर तय करनेवाली टीमों को भी अच्छी-खासी प्रोत्साहन-राशि दी जायेगी। पुरस्कार की रकम तो खैर इस बार काफी ज्यादा है ही। यही वजह है कि टीमों के आकलन का खेल भी शुरू हो गया है। फुटबॉल 90 मिनट तक चलनेवाला ऐसा मुकाबला है, जिसके आखिरी परिणाम को लेकर अंत-अंत तक कहना काफी कठिन होता है। फिर, विश्व कप मेंतो वेटीमेंआती हैं, जिनको यहां तक पहुंचने से पहले विभिन्न कठिन मुकाबलों से गुजर गु ना पड़ता है। लिहाजा अभी टीक-टीक कहना मुश्किल है कि कौन-सी आठ टीमें 'राउंड ऑफ 16' तक पहुंचेगी, लेकिन ब्राजील, ब्रेलिंज यम, अर्जेंटीना, इंग्लैंड, उरुवे, स्पेन, फ्रांस आदि पर विशेष नजर है, क्योंकि इनमेंकाफी ज्यादा क्षमता है। जर्मनी और क्रोएशिया की टीमों नेबेशक पिछलेविश्व कप मेंअच्छा प्रदर्शन नहीं किया था, मगर उनसेभी इस बार काफी उम्मीदें लागी जा रही हैं। कतर मेंकमोबेश सभी टीमेंअपनी खास रणनीति के साथ पहुंची हैं। इंग्लैंड के खिलाड़ियों ने पिछले

एक साल में अच्छा खाला है। उन्हाने 62 फासदों गाल 'डड बाल सिचुएशन' की मेंमोरी हैं। इसका अर्थ है कि वेकर्नर, प्री किक, पेनल्टी जैसेमोरीकों को बखूबी अपनेहक में भुगा सकते हैं। इसी तरह, जर्मनी की टीम आक्रामक खेल मेंविश्वासापनी करती है, तो ब्राजील का हौसला केंपेडेरेशन कप और कोपा अमेरिका मेंबेहतर यदर्दशन करनेके कारण बुलंट है। उसके पास नेमार जैसेखिलाड़ी भी हैं, जो किसी क्षण मुकाबलेका रुख बदल सकते हैं। यह अच्छी बात हैकि भारत में कुट्टबॉल को लेकर उत्साह बढ़ा है। कोलकाता में तो फुटबॉलप्रेमी ब्राजील और अर्जेंटीना टीमों के बीच बढ़े होते हैं। वहां हर घर मैनेमार, लियोनेल मैसी जैसेखिलाड़ियों की तस्वीरें दिख जाती हैं। दक्षिण मैकेरल जैसे राज्यों पर भी कुट्टबॉल का बुखार चढ़ने लगा है। दिल्ली में रुझान इस कदर बढ़ रहा हैकि वहां नये-नये बच्चों को मैदानों में पसीना बहाते देखा जा सकता है। ऐसेमें, यह वेंडंबना ही हैकि हमारी टीम फीफा विश्व कप जैसे अहम मुकाबलों के लिए बालीफाई नहीं कर पाती। हालांकि, 2026 के लिए काफी उमीदें हैं। अगले वेश्व कप मैक्सिस को, कनाडा और अमेरिका मेंसंयुक्त रूप से आयोजित हो रहा हैऔर इसमेंटीमों की संख्या 32 सेबढ़ाकर 48 की गई है।

— ગુજરાતી વિકાસ

परतों में पलती वंचनाये

ज व महलाजा के खिलाफ हाल वाला वारदाते मंडिया के विभिन्न माध्यमों में सुखियां बनती हैं तो महिला होने के नाते एक ही सवाल मन में आता है कि इन पर लगाम कब लगेगी। हद तो तब हो जाती है जब घर की बच्ची को कोई बाप या भाई ही अपनी हवस का शिकार बना लेता है। निश्चित ही उस परिवार की मां खुद को ही इस दुनिया में बेटी लाने के लिए कोसती रहती होगी! विडंबना यह है कि परिवार अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए घर से दूर नौकरी करने की अनुमति देता भी है तो न जाने कितनी लड़कियों की मजबूरी का फायदा उठा कर उन्हें मार दिया जाता है या मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों और अपराध के ऐसे कितने उदाहरण दिये जाएं? कहां से शुरू किया जाए और कहां खत्म हो? यह दुविधा खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही। बस मन में एक ही सवाल धूमत रहता है कि कैसे इन अपराधों पर पूरी तरह रोक लगाई जायेगी और क्यों एक महिला स्वतंत्र देश में आजादी के साथ धूम नहीं सकती? हममें से अधिकतर लोग यही सोचते हैं कि जब उनकी बेटी घर से बाहर निकलती है तो वह सबसे ज्यादा असुरक्षित होती है। लेकिन सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा किये गये अध्ययन बताते हैं कि महिलाओं के खिलाफ होने वाली शारीरिक हिंसा के सत्तर फीसद मामले तो घर के अंदर ही होते हैं। दूसरी तरफ बलात्कार के नब्बे फीसद मामलों में आरोपी उनके परिवार का ही कोई सदस्य, रिश्तेदार या दूर का कोई जानने वाला होता है। हमारे देश में एक अन्य अपराध कन्या भ्रूणहत्या का है, जिसके अतिरिक्त हर साल देश में पांच लाखी मार दी जाती है। उन निर्णय घर में परिवार वेल मिल कर लेते हैं। इसलिए कि महिलाओं के खिलाफ में घर के बाहर ही होगा के मूल तक जाया जाएगा लड़की और लड़के। सामाजिक प्रशिक्षण में लड़की के जन्म से ही जाया बाहरी सदस्य समझ अपनाया जाता है और की पूरी स्वतंत्रता दी जाती है। इसी स्वतंत्रता पर लगाम यह आशंका खड़ी होती है कि आजादी पता नहीं कब पितृसत्तात्मक समाज में कमजोर समझा जाता है बचपन से ही 'माचो मैन' व्यक्ति का दृष्टिकोण विकल्प वजह है कि पुरुष द्वारा किये गए प्रति हिंसा करने में व्यक्तिकी उन्हें लगता है। कुछ नहीं बिगाड़ सकता कि प्रति बढ़ती हिंसा का असर है। सबसे पहले यह स्वतंत्रता प्रकृति ने महिलाओं की अपराधों को ऐसा बनाया है तो उसके बाद को पूर्ण करना है, न तो किंतु कौन घर के बाहर कौन अंदर का काम करेगा?

व रिपो क मुताबक लड़कियों को भारने का सदस्य ही आपस में यह सोचना गलत है अत्याचार हर स्थिति परिप्रेक्ष्य में समस्या तो परिवारों में जहां पालन-पोषण और नेद किया जाता है। से परिवार का अन्य कर दोहरा रवैया टे को कुछ भी करने नहीं है। बटे को मिली हीं लगाई जाती है तो है कि यह बेलगाम पराध बन जाए। इस कमोबेश महिला को जबकि पुरुष वर्ग को यानी हावी होने वाले ब्याया जाता है। यही कर्सी महिला या बेटी नहीं देरी नहीं लगती, कमजोर वर्ग हमारा यही सोच महिलाओं बसे बड़ा मूल कारण ज्ञान होगा कि अगर रारीरिक संरचना को कारण प्रजनन क्षमता यह सुनिश्चित करना काम करेगा और वाहए के बचपन स हा अच्छ स्सकारा स महिलाओं के प्रति समानता और आदर के भवना लाएं। खासतौर पर लड़कों के बचपन से यह दृष्टिकोण देने और सिखने की जरूरत है। अगर संकुचित विचारों, मूल्यों और धर्म के आड़ में महिला को कमजोर किया गया तो यह असमानता की खाई और चौड़ी होती जायेगी औनके प्रति अत्याचार को समाज की अप्रत्यक्ष सहमति माना जायेगा। संविधान के अनुसार पुरुष और महिलाएं समान हैं, लेकिन सामाजिक तौ पर दोनों में असमानता की दीवार खड़ी कर दी गई है। दुर्भाग्य से इस सोच को बढ़ावा देने वाले में पुरुष और कुछ महिलाएं दोनों हैं। विशेषकर कुछ सक्षम वर्ग विशेष की महिलाओं को समझने चाहिए कि उनकी ऐसी सोच का खियाजा सभी महिलाओं को भुगतना पड़ता है। इस समस्या के एक अन्य पहलू यह है कि महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा को रोकने के लिए कड़े कानून बनाये जाएं। लेकिन कई बार लगता है कि वे मत्री या विधायक क्या कानून बनायें जो कहीं न कहीं किसी बेटी के बलात्कार, हत्या या दहेज जैसे संग्रन आरोपों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। इसलिए जनता को भी चाहिए कि इस मुद्दे पर एकमत हो और नीति-निर्माताओं से सवाल पूछें। तभी हम आशा कर सकते हैं कि सरकारें महिला सुरक्षा के प्रति गंभीरता से सोचेंगे और उनके प्रति हो रहे जघन्य अपराध के लिए कागजों पर बने कानूनों से बाहर निकल कर कठोर सजा का प्रावधान करेंगी। यह मुद्दा सिफ सुरक्षा का नहीं, बल्कि दुनिया की आधी आवार्द के मानवाधिकारों का है।

■ निधि शर्मा

संपादक के नाम पाठकों की पाती नालियों की सफाई जरूरी

आ म लोगों में सफाई के प्रति जागरूक नहीं होने के कारण प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन उतना सफल नहीं हो पा रहा है। अभी भी लोग सफाई के प्रति उदासीन हैं। शौचालय के निर्माण में भी गंभीरता नहीं बरती जारही है। भट्ट लोगों ने उसे कमाने का जरिया बना लिया है। कई तो उस पर्दे शौचालय बनाकर अन्य कामों उसका उपयोग कर रहे हैं। मेदिनीनगर शहर में भी घनी आबादी वाले में मुहळों में नलियां जाम हैं। जाम होने का मुख्य कारण उन नलियों में भारी मात्रा में पॉलिथीन व प्लास्टिक की बोतलों का फेका जाना है। यह दोनों ही चीजें न गलती हैं ना ही सड़ती हैं, जिसके कारण नलिया जाम हो जाती है। अगर नाली सड़ी सब्जी या अन्य खाद्य सामर्थ्य डालते हैं तो वह सड़ गल जाती है, लेकिन पॉलिथीन व प्लास्टिक बोतल व अन्य कुरकुरे व चिप्स के पैकेट सड़ते -गलते नहीं जिसके कारण नलियां जाम रहती हैं। वहीं शहर की कई बड़ी नलियों में काफी कूड़ा रहा है। यह कूड़े बरसात आने पर ही वहां से बहते हैं। यह बात भी गौर करनेवाली है कि जबसे प्लास्टिक व पॉलिथीन का प्रचलन हुआ है नलियों में गंदगी बढ़ी है। कागज के उपयोग से इतनी गंदगी नहीं हुआ करती थी। मैं आपके लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र राष्ट्रीय नवीन मेल के माध्यम से लोगों से आग्रह करता हूं कि नलियों में पॉलिथीन व प्लास्टिक की बोतलें नहीं फेंके।

■ सैन्य काम ऐसी रिपोर्ट

फुटबॉल वर्ल्ड कप के मजबूत दावेदार कौन

फुटबॉल विश्व कप के 20 नवंबर से कतर में शुरू होने वाले साथ ही दुनिया फुटबॉल के बुखार में जकड़े जा रही पहली बार किसी अरब देश में हो रहे इस विश्वकप मुकाबले की चैपियन टीम फ्रांस खिताब पर कब्जा बनाये रखने का प्रयत्न करेगी तो बाकी टीमें उसकी जगह पहुंचने की कोशिश करेंगी। पिछले 92 सालों से आयोजित हो रहे इस विश्व कप के इतिहास में रिकॉर्ड नौ ही टीमें खिताब पर कब्जा जमा सकी हैं। इनमें भी ब्राजील पारा, जर्मनी और इटली चार-चार बार खिताब जीतकर सबसे अधिक हैं। इसमें मेजबान करने के अलावा कई भी ऐसी टीम नहीं है, पहली बार विश्व कप में खेल रही हो। दुनिया में विश्व कप जर्बर्डस्ट लोकप्रियता तो है ही, इसमें पैसों की भी भरमार है। हायहां आमतौर पर माना जाता है कि क्रिकेट में धन वर्षा होती लेकिन फुटबॉल में मिलने वाली इनामी राशि के सामने क्रिकेट बहुत नहीं ठहरता। फुटबॉल विश्व कप में कुल इनामी राशि 35-37.6 करोड़ रुपये से ज्यादा है। वहीं टी-20 विश्व कप में कुल इन राशि 45.4 करोड़ रुपये थी। इसका मतलब हुआ कि फुटबॉल विश्व कप में विजेता टीम को मिलने वाली रकम टी-20 विश्व कप

वाली टीम को 344 करोड़ रुपये मिलने हैं। यही नहीं फुटबॉल कप में आखिरी यानी 32वें स्थान पर रहने वाली टीम को 20 विश्व कप की कुल इनामी राशि का करीब डेढ़ गुना या करोड़ रुपये मिलेंगे। टी-20 विश्व कप की चैपियन टीम इंडिया महज 13 करोड़ रुपये मिले। फुटबॉल विश्व कप का ज्ञायोजन होता है तो ब्राजील, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका को खिताब का प्रमुख दावेदार माना जाता है। यह विश्व कप इससे हटकर नहीं है। ब्राजील को खिताब जीतने का दावेदार जाने का मुख्य कारण उसकी विश्व में पहली रैंकिंग के बदलावालायर में शानदार प्रदर्शन करना रहा है। उसने इसमें खेल मैचों में से 14 जीते और तीन ड्रॉ करवाए। इस दौरान उस गोल दागे और विरोधी टीमें उसके खिलाफ पांच ही गोल कर जहां तक फ्रांस के खिताब की रक्षा करने की बात है तो यह थोड़ा मुश्किल लगता है। यह सही है कि उसके पास एम्बायें, बेंजेमा और डेंभेले आोसमैन के रूप में बेहतीन फॉर्मरवर्ड हैं। मिडफील्ड की जान माने जाने वाले काटे और पोगबा के होने की बजह से बाहर होने के कारण टीम में थोड़ी कमज़ोरी है। कोच डेसचैंप ने इसकी भरपाई का प्रयास जरूर किया

वश्व टी- 74 को भी अंटीटीना भी माने दावा । 17 40 कर्की। काम रियम किन टिल आई पर की जब भी बात होती है तो नेमार का नाम सबसे पहले जेहन में आता है, क्योंकि उन्हें इस टीम की जान माना जाता रहा है। पर इस बार ब्राजील ने उनको केंद्रित करके योजना नहीं बनाई है। असल में पिछले विश्व कपों में उनको केंद्रित करके बनाई योजनाएं टीम को चौंपियन बनाने में असफल रही थीं। बेहतरीन प्लेयर होने के बावजूद नेमार अब तक अपनी टीम को विश्वकप नहीं दिला सके हैं। इस कारण टीम को 2002 में अखिंगी बार कपासन के तौर पर खिताब दिलाने वाले काफ़ू ने कोच रहते ऐसी योजना बनाई है, जिसमें नेमार के ऊपर टीम की निर्भरता कम कर दी गई है। इस बार टीम के हमलों की कमान विनीसियस जूनियर, रिचर्लोसन और राफिन्हा के हाथों में रहेगी। नेमार की तरह ही दुनिया के सबसे लोकप्रिय खिलाड़ियों में शुमार होते हैं, अंजेटीना के लियोनल मेसी। अंजेटीना ने भी इस बार लियोनल मेसी को केंद्र में रखकर रणनीति नहीं बनाई है। इस टीम की पिछले कुछ समय की सफलताओं पर नजर दौड़ाएं तो साफ होता है कि इसके पीछे प्रतिभाशाली मिडफील्डरों की तिकड़ी-रोड़िगो डि पॉल, अलजांद्रो गोमेज और लियोने- की प्रमुख भूमिका रही है। असल में यह तिकड़ी अपने शानदार प्रदर्शन से मेसी के लिए पर्याप्त स्पेस बनाकर देती रही है।

■ मनोज चतुर्वेदी

